ॐ

~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-अष्टम ***विषय- हिन्दी***

दिनांक-16-01-2021 ***कैकेयी का अनुताप***

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

कैकेयी का अनुताप

--मैथिलीशरण गुप्त

उल्का-सी रानी दिशा दीप्त करती थी,
सबमें भय-विस्मय और खेद भरती थी।
क्या कर सकती थी, मेरी मंथरा दासी,
मेरा ही मन रह सका न निज विश्वासी।
~~~~~~~~~

जल पंजर-गत अब अरे अधीर, अभागे,
वे ज्वलित भाव थे स्वयं तुझी में जागे।
पर था केवल क्या ज्वलित भाव ही मन में?
क्या शेष बचा था कुछ न और इस जन में?

कुछ मूल्य नहीं वात्सल्य-मात्र, क्या तेरा?
आज अन्य-सा हुआ वत्स भी मेरा।
थूके, मुझ पर त्रैलोक्य भले ही थूके,
जो कोई जो कह सके, कहे, क्यों चूके?

छीने न मातृपद किंतु भरत का मुझसे,
है राम, दुहाई करूँ और क्या तुझसे?
कहते आते थे यही सभी नरदेही,
'माता न कुमाता' पुत्र कुपुत्र भले ही।

क्रमशः

छात्र कार्य- प्रस्तुत दोहे को कंठस्थ याद करें।

धन्यवाद ।

कुमारी पिंकी 'कुसुम'

🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲🌲